

आधारभूत मानवीय मूल्य-

यहाँ मानवीय मूल्यों की एक सूची प्रस्तुत की जा रही है जिसके प्रति आम लोग समान रूप से आस्था प्रकट करते हैं, अर्थात् इन मूल्यों को सार्वभौम व सर्वगतमूल्यों की कोटी में रखा जा सकता है। ये हैं-

सत्यता (सत्य)

प्रेम और सेवा भावना

शांति ।

अहिंसा ।

न्याय

सत्यता (सत्य)-

किसी तथ्य की सत्यता किसी व्यक्ति विशेष की इच्छा या आकांक्षा पर निर्भर नहीं करती। सत्यता का अस्तित्व इच्छाओं, हितों एवं विचारों से स्वतंत्र होता है। यह सच है कि कोई भी झूठा व्यक्ति बल्कि अधिकांश झूठे लोग स्वयं को झूठा कहलवाना पसंद नहीं करते। इस बात को प्रमाणित करता है कि सत्य एक मनोवैज्ञानिक तथ्य है तथा यह मानव मन में अन्तर्निहित होता है। सत्य से बौद्धिक संतुष्टि मिलती है। केवल सत्य के अस्तित्व का ही नहीं, बल्कि सत्य के ज्ञान का भी साध्यमूल्य होता है। यह सर्वविदित है कि सत्य एक साध्यमूल्य है।

प्रेम और सेवा भावना-

यहां 'प्रेम' शब्द का व्यापक अर्थ है। यहां 'प्रेम' से अभिप्राय है स्नेह रखना, ध्यान रखना तथा किसी की सुध लेना। मानव मूल्यों में यह बेहद मौलिक है जो दूसरों के प्रति आदर तथा सेवा भावना को व्यक्त करता है। प्रेम को व्यक्ति सामान्य तौर पर 'व्यक्तिगत' अर्थों में लेता है जिसमें काम विषयक भावना निहित होती है। परन्तु मानव मूल्य के अर्थ में प्रेम का सार एक पवित्र भावना को परिलक्षित करता है। यहां 'प्रेम' का अर्थ निःस्वार्थ प्रेम है जो दूसरों के प्रति तथा पूरे विश्व के प्रति समर्पित किया जा सकता है प्रेम में स्वार्थ की भावना जितनी ही कम होगी जीवन की गुणवत्ता में उतनी ही अधिक वृद्धि होगी यद्यपि 'प्रेम' शब्द स्वयं में अस्पष्ट एवं झूठ है परन्तु इसे परोपकारिता, क्षमा तथा सालमल के अर्थों में भी समझा जा सकता है। प्रेम की भावना अथवा संवेग के अर्थों में नहीं लिया जा सकता बल्कि इसे सिर्फ मानव चेतना के स्तर पर ही समझा जा सकता है। वस्तुतः यह मनुष्य की आत्मा की एक अदभुत विशिष्टता है और सार्वभौम सत्य भी।

शांति-

शांति एक भावात्मक मूल्य है जो सार्वदेशिक और सार्वकालिक है। शांति का अर्थ है समरसता अथात् द्वेष और संघर्ष का अभाव। यह एक संतुलित परन्तु गत्यात्मक मानसिक स्थिति है। मानवीय मूल्यों – एक प्रकारात्मक संबंध होता है। अतः व्यक्ति अथवा समाज के नियंत्रण या अनुमोदन से समस्त मानवाय अभिप्रेरणाएं मूल्यों में रूपान्तरित हो जाती है। इनमें से सभी भावात्मक मानवीय मूल्यों के सम्मिलन से ही शांति की स्थापना संभव हो पाती है चाहे वह व्यक्तिगत जीवन में हो या फिर समाज या विश्व के स्तर पर। सत्य, न्याय और प्रेम, तथा भाईचारा शांति की स्थापना के लिए आवश्यक शर्तें हैं जिनके अभाव में हितों का संघर्ष शुरू होता है तथा शांति खतरे में पड़ जाती है। हलांकि शांति को उपद्रव, हिंसा युद्ध तथा दुराचार के अभाव के रूप में भी समझा जा सकता है परन्तु इसके मूर्त रूपको समझना मुश्किल नहीं क्योंकि व्यक्ति इसे एक-दूसरे के प्रति आदर, मित्रभाव, सहिष्णुता और सक शांति के रूप में स्पष्ट रूप से महसूस करता है। मन की शांति भले ही एक व्यक्तिगत अनुभव परन्तु समाज के सदस्यों में शांति की स्थापना सकारात्मक कार्यों से ही संभव है।



अहिंसा-

मानवीय मूल्यों में अहिंसा का महत्वपूर्ण स्थान है। अहिंसा के बिना सर्वोच्च सत्य की सिद्धि असम्भव है। अहिंसा का अर्थ है हिंसा न करना अर्थात् यह एक मानवीय प्रवृत्ति है जिसमें व्यक्ति प्राणियों तथा उनके परिवेश को हर प्रकार की हानि से सुरक्षित रखने की चेष्टा करता है। स्वार्थ और द्वेष को त्यागकर क्रोध पर विजय प्राप्त करना तथा किसी को भी किसी प्रकार का दुःख या कष्ट न पहुँचाना अहिंसा है। मूल्यात्मक अवधारणा होने के साथ-साथ अहिंसा एक व्यापक अवधारणा भी है। इस अर्थ में पर्यावरण तथा पारिस्थितिक तंत्र का शोषण तथा प्रदूषण आदि से रक्षा करना भी अहिंसा के अंतर्गत आता है। वस्तुतः इस कार्य से अहिंसा की भावना को बल मिलता है। यह एक ऐसी प्रवृत्ति है जो हमें अनैतिक कार्य करने तथा प्रकृति में असंतुलन पैदा करने जैसे कार्यों से रोकता है। हिन्दू धर्म तथा गांधी दर्शन में भी अहिंसा की व्याख्या इसी रूप में की गई है। वस्तुतः अहिंसा करना आदर्शवाद नहीं है। यह एक ऐसा मूल्य है जिसे सभी धारण कर सकते हैं। अहिंसा के आधार पर ही आदर्श समाज का संगठन किया जा सकता है।

न्याय-

यूरोपीय परम्परा के अन्तर्गत न्याय को उच्चतम मानवीय मूल्यों की कोटि में रखा गया है बल्कि सुकरात एवं प्लेटो ने तो इसे उच्चतम मानवीय मूल्य के रूप में स्वीकार किया है। 'न्याय' की संतोषजनक परिभाषा देना यद्यपि मुश्किल है परन्तु इतना अवश्य कहा जा सकता है कि न्याय आधार निष्पक्षता है जिसका मौलिक अर्थ यह है कि कानून के समक्ष सभी व्यक्ति समान है। न्याय एक सामाजिक मूल्य है जो अहिंसा व स्नेह के नियमों से संचालित होता है। न्याय का मूल उद्देश्य है संघर्षों को कम अथवा समाप्त करना। सार्वजनिक कल्याण हेतु सामाजिक न्याय की परम्परा अत्यंत प्राचीन है जिसका उदाहरण हमें इतिहास-पूर्व काल में भी देखने को मिलता है। सभी समाजों में इसे एक केन्द्रीय विचार के रूप में अपनाया जाता रहा है। न्याय की संकल्पना प्राचीन यूनान में चिंतन का मुख्य विषय रही है और इसी से बाद में मानवाधिकारों की संकल्पना का प्रादुर्भाव हुआ। तत्पश्चात् दिसम्बर, 1948 में जेनेवा कन्वेंशन के द्वारा मानवाधिकारों की विश्वजनीन घोषणा जारी की गई।

न्याय एक राजनीतिक मूल्य भी है और इस अर्थ में भी इसकी प्रासंगिकता व्यापक है क्योंकि राजनीति लोकतंत्र के साथ-साथ अन्य शासन प्रणालियों में भी राजनीतिक न्याय के आधार पर ही समतापूरक समाज और राष्ट्र की स्थापना की जा सकती है। मानवीय मूल्य होने के नाते न्याय की महत्ता इसी बात से स्पष्ट होती है कि यह सामाजिक जीवन के सभी पक्षों को प्रभावित करता है। आज न्याय के संबंध में केवल ऐसी संकल्पना को स्वीकार किया जाता है जिसका निर्माण जीवन के सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक यथार्थ को सामने रखकर किया गया हो। न्याय के मूल्य को वेदों में उल्लिखित अहिंसा के अर्थ में भी समझा जा सकता है जहां अहिंसा को 'सभी प्राणियों के प्रति प्रेम और आदर के रूप में स्वीकार किया गया है। यह तथ्य इस धारणा पर आधारित है कि सृष्टि सावयव है। यद्यपि भिन्न-भिन्न प्राणियों का स्वतंत्र अस्तित्व है परन्तु सब एक-दूसरे से जुड़े हैं। सृष्टि एक समुच्चय है तथा सभी प्राणी इसके अंग हैं। सृष्टि तथा इन प्राणियों में अंग-अंगी का संबंध है। इस सृष्टि में एक विशिष्ट प्रकार की एकता है। अतः 'न्याय' से अभिप्राय है इन सभी जीवों के प्रति एक समान व उचित व्यवहार।